• कविताएं...

संबंध

मुश्किल होता है-
आंधियों के बीच
दीपक की लौ को बचाये रखना।
या फिर-
काजल की कोठरी से
गुजरते हुए-
अपने चेहरे को
साफ-सफेद बनाये रखना।
'लौ' को बचाने की कोशिश में
हाथ झुलस जाते हैं
लेकिन-
हाथ झुलसने की पीड़ा
'दीपक' या 'लौ'
कहां समझ पाते हैं।
चेहरे की सफेदी
बनाये रखने की कोशिश में
पूरा अन्तर्मन छिल जाता है
कोठरी का काजल
अन्तर्मन की पीड़ा
कहां समझ पाता है।
सच!
बहुत मुश्किल होता है-
किसी को-
अपनी आंखों में बसाये रखना
या फिर-
संबंधों को बनाये रखना।

■ *विनोद् पाराशर*

कब से गोरी है घूंघट में

कब से गोरी है घूंघट में
कठिनाई है बहुत उलट में।
हीरा हीरा ही रहता है
ताज में या कूड़ा करकट में।
पी की मूरत मन में उतरी
कुछ तो पाया नींद उचट में।
चेहरे का उपहार बंधा है
सजनी की इस सुंदर लट में।
कभी याद-सी जल उठती है
सीने के सूने मरघट में।
यह अब जहर-सा क्या बहता है
गंगा जी के पावन तट में।
'अरुण' जाम से पीने वाला
आज वह क्या ढूंढे तलछट में।

■ *विजय 'अरुण'*

• कहानी/भीष्म साहनी

लीला नन्दलाल...

गतांक से आगे...

पत्नी भी चहक उठी। उसने मेरी ओर यों देखा जैसे उसकी नजर में फिर मेरी कीमत कुछ-कुछ बहाल होने लगी है। पर पिताजी में तनिक भी उत्साह नहीं था। कहने लगे, 'अब वह चोरी का माल है, जिस चीज को चोर का हाथ लग जाए उसमें कोई बरकत नहीं रह जाती। फिर छह महीने बाद मिल रहा है। स्कूटर का रह ही क्या गया होगा, उसकी हड्डी - पसली हिल गई होगी। 'इस पर चाचाजी ने सहमति में सिर हिलाया और मेरा दिल धक् से रह गया। पिताजी और चाचाजी सहमत हो रहे थे, यह शगुन अच्छा नहीं था । उनके बीच झगड़ा चलता रहे तो लगता है जीवन स्वाभाविक गति से चल रहा है ।

'तुम स्कूटर वापस ले ही कैसे सकते हो? तुम तो बीमा कम्पनी के मुआवजा वसूल कर चुके हो।'

'मुआवजे का क्या है वह तो लौटाया भी जा सकता है।'

'अगर बीमा कम्पनीवाले इनकार कर दें तो?'

'मोटा नन्दलाल जो है, उसके रहते वह इनकार नहीं करेंगे।' मैने बड़े साहस से कहा।

आखिर फैसला हुआ कि स्कूटर की शिनाख्त करके पहले अच्छी तरह से दिखवा लेना चाहिए। फैसला बाद में करेंगे कि वापस लेंगे या नहीं।

दूसरे दिन पुलिस की चिट्ठी जेब में रखे मैं श्यामनगर की ओर चला जा रहा था। मन फिर से स्कूटर की सैर के सपने देखने लगा था। पत्नी भी खुश हो जाएगी, स्कूटर के खो जाने से घर में जो मायूसी छा गई थी, वह दूर हो जाएगी।

देर तक मुझे श्यामनगर की सड़कों की खाक छाननी पड़ी। वह बाड़ा मुझे नहीं मिल रहा था जिसका पता पुलिसवालों ने मुझे दिया था। स्कूटर को बाड़े में रखने में क्या तुक थी, पुलिस स्टेशन में उसे क्यों नहीं रखा गया? फिर सोचा कि शायद बाड़ा भी पुलिस का ही होगा जहाँ पुलिस चोरी का बरामदी माल रखती है, एक तरह का गोदाम बना रखा होगा।

आखिर मैंने बाड़े के अन्दर कदम रखा। बड़ा - सा आंगन था और आंगन के पीछे एक छोटा सा बंगला था। आँगन में सात - आठ मोटरें और चार-पाँच स्कूटर खड़े थे। क्या यह सब बरामद माल है? क्या मैं किसी गलत जगह पर तो नहीं आ गया? यह तो किसी अमीर आदमी का बंगला जान पड़ता है । मैं कहाँ आ पहुँचा हूँ? मैंने पुलिस की चिट्ठी निकालकर पता ध्यान से पढ़ना चाहा, तभी बंगले की ओर से एक सज्जन आते दिखाई दिए, सफेद नाइलॉन की कमीज और टेरीकोट की पतलून पहने हुए थे।

'माफ कीजिए, मुझसे भूल हुई। मैं किसी दूसरे बाड़े की तलाश में हूँ।'

और मैंने पुलिस का पर्चा अनायास ही उनके हाथ में दे दिया।

उन्होंने सरसरी नजर से पर्चे की ओर देखा और एक ओर को हाथ का इशारा करते हुए बोले, 'वहाँ स्कूटर रखे हैं, उनमें से अपना स्कूटर पहचान लीजिए।'

मैंने उन सज्जन को सिर से पाँव तक देखा। क्या यह पुलिस के अफसर हैं, जिन्होंने अपने बंगले में ही बरामद का माल रख लिया है? पुलिस के बड़े अफसर घर पर वर्दी नहीं पहनते, इसीलिए यह नागरिक वेश में हैं। पर पुलिस के अफसर इतनी ज्यादा अंगूठियाँ भी अँगुलियों में नहीं पहनते जितनी इन्होंने पहन रखी हैं। पर क्या मालूम पहनते ही हों। वर्दी पहनी तो अंगूठियाँ उतार दी, वर्दी उतारी तो अंगूठियाँ चढ़ा लीं।

मैं एक ही नजर में पांचों स्कूटरों को देख गया, लेकिन इनमें मेरा स्कूटर मुझे नजर नहीं आया। फिर मैं बड़े ध्यान से एक–एक स्कूटर को देखने लगा। एक स्कूटर कुछ–कुछ मेरे स्कूटर से मिलता– जुलता था, लेकिन उस पर बढ़िया–सा शीशा लगा था और हैण्डल के पास ही रेडियो के ऐरियल की छड़ ऊपर को उठ रही थी, उसमें सचमुच लाउडस्पीकर लगा था। यह स्कूटर मेरा कैसे हो सकता है?

मुझे अपना स्कूटर देखने की उत्सुकता थी। मैं बिना कुछ कहे उस ओर घूम गया जहाँ स्कूटर रखे थे।

मैं एक ही नजर में पांचों स्कूटरों को देख गया, लेकिन इनमें मेरा स्कूटर मुझे नजर नहीं आया। फिर मैं बड़े ध्यान से एक-एक स्कूटर को देखने लगा। एक स्कूटर कुछ-कुछ मेरे स्कूटर से मिलता- जुलता था, लेकिन उस पर बढ़िया-सा शीशा लगा था और हैण्डल के पास ही रेडियो के ऐरियल की छड़ ऊपर को उठ रही थी, उसमें सचमुच लाउडस्पीकर लगा था। यह स्कूटर मेरा कैसे हो सकता है?

तभी वह सज्जन मेरे पास आ गए ।

'पहचान लिया? यही आपका स्कूटर है ना! उन्होंने कहा और मेरे स्कूटर के हैण्डल को सहलाते हुए बोले, 'इसे तो मैंने खास खयाल से रखा है। इसे कहीं आँच तक नहीं आई।'

'आपने? क्या मतलब?'

'इस स्कूटर को तो मैं केवल अपने लिए इस्तेमाल करता था। मुझे इसकी सवारी बड़ी पसन्द है। 'फिर बड़े चाव से स्कूटर पर लगे एरियल को छूते हुए बोले, 'यह एरियल मैंने लगवाया है। मैकेनिक कहने लगा, स्कूटर पर एरियल नहीं लग सकता। मैंने कहा, ऐसी की तैसी, लगता कैसे नहीं। 'वह भी उसी लहजे में बोल रहे थे जिसमें मैंने मोटे नन्दलाल को बोलते सुना था। क्या वे सभी लोग जिनकी अँगुलियों में अंगूठियाँ दमकती हैं, एक - जैसे ही लहजे में बोलते हैं, सभी की ऐसी की तैसी करते फिरते हैं?

आखिर यह आदमी कौन है? मेरे स्कूटर के बारे में इतने अधिकार से कैसे बात कर रहा है ? 'क्या यह सब बरामदी का माल है?'

'और क्या?' उसने तनिक ऐंठ के साथ कहा, मानो कह रहा हो कि हम उठाएंगे तो क्या एक ही स्कूटर उठाएँगे?'

'क्या आप ही ने...?' मैं इतना ही कह पाया। यों भी सूट-बूटवाले आदमी का मुझ पर रोआब छा जाता है। यहाँ तो इसके दोनों हाथों की अँगुलियों पर नगीने चमक रहे थे, और नाइलॉन की कमीज के नीचे सोने की चेन थी।

मेरा सिर चकरा रहा था। यह आदमी चोर कैसे हो सकता है? न इसकी बगल में छुरा, न दाढ़ी- मूंछों के बीच चमकते खूंखार दाँत, पर दिन -दहाड़े अपने मुँह से मुझे कह रहा है कि तुम्हारा स्कूटर मैंने उठाया है। क्या चोर ऐसे होते हैं? अलीबाबा का भाई कासिम चोरों की गुफा में गया था, और वहाँ से जिन्दा लौट नहीं पाया था। मैं इसके बाड़े में खड़ा हूँ और यह इस तरह मेरे साथ बतिया रहा है जैसे मेरा मौसेरा भाई हो! आखिर यह माजरा क्या है?

'क्या ये सभी मोटरें और स्कूटर आप ही के हाथ की सफाई...' मैंने बेतकल्लुफी से कहा।

'और क्या -' उसने बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा, और फिर से मेरे स्कूटर को सहलाने लगा, 'यह शीशा तो इस पर मैंने बाद में लगवाया था जब मैं वैष्णोदेवी की यात्रा करने जा रहा था। इलाका पहाड़ी है न, पीछे से आनेवालों की खबर रहनी चाहिए। बड़े तीखे मोड़ हैं । घर के लोग बहुत कहते रहे, हम तुम्हें स्कूटर पर नहीं जाने देंगे, पर मैं नहीं माना। मैंने कहा, देवी की कृपा होगी तो कुछ नहीं होगा।'

'आप वैष्णोदेवी की यात्रा पर गए थे?' मैं बुदबुदाया।

'मैं हर साल जाता हूँ। और कहीं जाऊँ या नहीं जाऊँ, पर वैष्णो देवी के दर्शन करने जरूर जाता हूँ।'

उसने धर्मपरायण व्यक्ति की तरह तनिक गद्गद होकर कहा, 'साल में एक बार तो देवी का प्रसाद मिलना ही चाहिए।'

'बेशक, मैंने कहा,' मेरे स्कूटर पर और भी कोई तीर्थ-यात्रा की है ? मैंने पूछा। पर वह सुना- अनसुना करके स्कूटर को फिर से सहलाने लगा।

'इसे तो मैंने बड़े चाव से रखा है । इसे केवल अपने इस्तेमाल के लिए रखता था ...हालाँकि स्कूटर की सवारी ज्यादा पसन्द नहीं करता।'

'बेशक, 'मैंने फिर कहा,'जिसके पास इतनी मोटरें हों, वह स्कूटर की सवारी क्यों करेगा। ÷मुझे लगा जैसे मैं उसकी चापलूसी करने लगा हूँ।

-जारी

• शायरी...

आईना भी मुझे, बरगलाता रहा।
दाहिने को वो बांया दिखाता रहा।।
दुश्मनी की अदा देखिये तो सही।
करके एहसान, हरदम जताता रहा।।

◆ ◆ ◆

तार खींचा और फिर छोड़कर,
चल दिया।
मैं बरस दर बरस झनझनाता रहा।।
उसने कोई शिकायत कभी भी न की।
इस तरह से मुझे वो सताता रहा।।

◆ ◆ ◆

मुझको मालूम था एक पत्थर है वो।
आदतन पर मैं सर को झुकाता रहा।।
ना फटा, ना बुझा, मन
का ज्वालामुखी।
एक लावा सा बस खदबदाता रहा।।

◆ ◆ ◆

देखिये तो 'ललित' की ये जिद देखिये।
पायलें, पत्थरों से, गढ़ाता रहा।।

-ललित मोहन त्रिवेदी

• एक उम्मीद

एक चाय पीऊंगी कभी
तुम्हारे साथ
आराम कुर्सी पे झूलते
कांपते हाथों से
पकड़ना कोई मुलायम सा
बिस्कुट
और ..
एक मुस्कान दोनो के होठें
पे।

–विशाखा विधु